National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(67): 45-50
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. सुस्मिता कोरोथ एडवना
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
सेंट जोसेफ कॉलेज ऑफ कॉमर्स,
स्वायत्त, बेंगलुरु - 560025
कर्नाटक, भारत

Correspondence:
डॉ. सुस्मिता कोरोथ एडवना
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
सेंट जोसेफ कॉलेज ऑफ कॉमर्स,
स्वायत्त, बेंगलुरु - 560025
कर्नाटक, भारत

हिन्दी साहित्य में महिला लेखिकाओं का संक्षिप्त अवलोकन

डॉ. सुस्मिता कोरोथ एडवना

"जानकी यशिबाई जनकचाँद थीं। उन्होंने अपना लेख पूरा किया, अपना निर्णय पूरा किया। अपना दायित्व सिद्ध किया और अपनी गरिमादायिनी सफलता प्राप्त की। जानकी यशिबाई जैसा एक जीवन, एक पूरे राष्ट्र की सहभागिता के लिए पर्याप्त है। यह सभी गुणों का संगम था। कहने के लिए स्त्री, केवल सत्रह वर्ष की आयु, गुलाब जैसी कोमल, स्वभाव से शुद्ध, फिर भी उसमें संगठन और अनुशासन की ऐसी शक्ति थी जो असाधारण पुरुषों में भी शायद ही पाई जाती है। उनके हृदय में देशभक्ति की अग्निशिखा निरंतर प्रज्वलित रहती थी। देश के सम्मान का उनमें जितना जोश था, उतनी ही वे अपने अनुशासन में दृढ़ थीं।"

(1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम – वीर लकोरज)[1]

"कहानी की इस प्रवृत्ति को पढ़कर ही महादेवी वर्मा को यह प्रेरणा मिली कि 'घुँघट की जूनी'[2] पर लिखा जाए। परिणामस्वरूप उनकी रचना 'घुँघट की जूनी' शीर्षक से सन् 1956 में बंगला भाषा में प्रकाशित हुई, जो उनकी पहली रचना थी और जिससे उनमें यह विश्वास जागा कि वे लिख सकती हैं। आज वे कविश्रेष्ठ के रूप में सम्मानित तथा एम.एस.सी. चार्ट से विभूषित हो चुकी हैं। ऐसी यशस्वी लेखिका की यह पहली रचना इतने लंबे अंतराल के बाद अनूदित रूप में हिन्दी के पाठकों को प्राप्त हुई है, जिसका श्रेय सुप्रसिद्ध लेखक डॉ. रामशंकर द्विवेदी को जाता है।"[3]

"डॉ. रामशंकर द्विवेदी ने इस रचना का अनुवाद करने का निर्णय इसलिए भी किया कि वे 'घुँघट की जूनी' से संबंधित लगभग सभी स्थानों से परिचित थे और लोक-परंपरा से प्राप्त अनेक तथ्य उन्हें ज्ञात थे, जबकि मूल लेखिका ने भी लोक-आस्थाओं का पूरा संग्रह प्रस्तुत है।

प्रस्तावना

भारतीय साहित्यिक परंपरा का इतिहास उस समय से आरम्भ होता है जब स्त्री केवल सामाजिक इकाई नहीं, बल्कि ज्ञान, चेतना और सृजन की मुख्य वाहक थी। वैदिक ऋषिकाओं की सूक्ष्म दार्शनिक दृष्टि से लेकर भक्ति युग की आत्मानुभूतिपूर्ण अभिव्यक्तियों तथा आधुनिक काल की राष्ट्रीय चेतना से होती हुई, इक्कीसवीं सदी की डिजिटल स्त्री-स्वर तक—यह यात्रा न केवल स्त्री लेखन का इतिहास है, बल्कि भारतीय समाज में स्त्री के बदलते अस्तित्व, संघर्ष और स्वाभिमान का वृत्तांत भी है।

हिन्दी साहित्य में महिला लेखन सदैव एक जीवंत परंपरा रही है, जिसने समय-समय पर सामाजिक मान्यताओं को चुनौती दी, नए प्रतिमान रचे, और स्त्री-अस्तित्व को विमर्श के केंद्र में स्थापित किया। भक्ति काल में मीराबाई और जनाबाई जैसे संत-स्वरों से लेकर आधुनिक युग में महादेवी वर्मा, जानकी यशिबाई और सुभद्रा कुमारी चौहान तक, तथा समकालीन युग में अनामिका, गीता श्री, मनीषा कुलश्रेष्ठ और बेबी हालदार तक—हर दौर में स्त्री लेखन ने अपनी भाषा, संरचना और विषय-वस्तु के माध्यम से बदलते समय का सशक्त दर्पण प्रस्तुत किया है। समकालीन साहित्य में स्त्री लेखन केवल सामाजिक सीमाओं के प्रतिरोध तक सीमित नहीं रह गया है; यह अब अंतर्मन, देह-चेतना, डिजिटल

अभिव्यक्ति, पर्यावरणीय संवेदना, हाशिए के अनुभव, और वैश्विक स्त्री-दृष्टि जैसे व्यापक प्रश्नों को संबोधित करता है। इस प्रकार हिन्दी महिला लेखन आज बहुआयामी स्वरूप ग्रहण कर चुका है—जहाँ परंपरा और आधुनिकता, अनुभव और विचार, स्थानीयता और वैश्विकता—सभी एक दूसरे के साथ सह-अस्तित्व में दिखाई देते हैं।

यह शोध-लेख इसी व्यापक साहित्यिक यात्रा का सुगठित, कालानुक्रमिक और विश्लेषणात्मक अवलोकन प्रस्तुत करता है। इसका उद्देश्य केवल महिला लेखन की उपलब्धियों का पुनर्पाठ करना नहीं है, बल्कि यह समझना भी है कि प्रत्येक युग में स्त्री-स्वर किस प्रकार उभरता, विकसित होता और समाज को नई दिशा प्रदान करता है। वैदिक युग की दार्शनिकता से लेकर डिजिटल युग की मुक्त अभिव्यक्ति तक, हिन्दी महिला लेखन समाज के चेतन-परिवर्तन में निरंतर अहम भूमिका निभाता रहा है—और यही इस अध्ययन का मूल आधार है।

प्राचीन से मध्यकाल तक महिला लेखन का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

1. वैदिक काल में स्त्री और सृजन का प्रारम्भ

भारतीय साहित्यिक परंपरा में स्त्री लेखन का आरम्भ वैदिक युग से माना जा सकता है।

ऋग्वेद में अनेक स्त्री ऋषिकाएँ (जैसे — *घोषा, लोपामुद्रा, अपाला, विश्ववारा, रोमशा, शाश्वती* आदि) अपनी ऋचाओं के माध्यम से दार्शनिक चिंतन, जीवन-दृष्टि और नारी की आत्मचेतना को अभिव्यक्त करती हैं।

- *लोपामुद्रा* की ऋचा में प्रेम, ज्ञान और वैवाहिक जीवन के बीच नारी की इच्छाओं का सूक्ष्म चित्रण है।[4]
- *घोषा* की ऋचाओं में सामाजिक स्वीकृति और व्यक्तिगत सम्मान का भाव दिखता है।[5]

इस काल में स्त्री को केवल उपासना या गृहिणी के रूप में नहीं, बल्कि विचारक, दार्शनिक और कवयित्री के रूप में देखा गया।

यह वह समय था जब स्त्री का बौद्धिक योगदान पुरुषों के समकक्ष माना जाता था।

2. उत्तरवैदिक और शास्त्रीय काल: सीमाओं का आरम्भ

समय के साथ पितृसत्तात्मक ढांचे के सुदृढ़ होने से स्त्रियों की स्वतंत्र सृजनात्मक भूमिका सीमित होने लगी।

महाकाव्य काल में यद्यपि *महाभारत* और *रामायण* में स्त्रियाँ (जैसे — *सीता, द्रौपदी, गार्गी*)[6] विचारशील और संवादक्षम पात्रों के रूप में प्रस्तुत हैं, परन्तु उनका लेखन स्वयं के स्वर में नहीं है — वे पुरुष लेखकों द्वारा रचित स्त्री-पात्र हैं।[7]

फिर भी, उनके संवादों में स्त्री-बुद्धि और आत्मसम्मान की छवि स्पष्ट दिखाई देती है।[8]

संस्कृत साहित्य में आगे चलकर **भवभूति, कालिदास** आदि ने स्त्री के सौंदर्य, प्रेम और करुणा को तो अभिव्यक्त किया, पर स्त्री का **स्वर** स्वयं उसके **लेखन** में नहीं, बल्कि **वर्णन** में उपस्थित रहा।

3. भक्ति काल: स्त्री स्वर की पुनःस्थापना

हिन्दी साहित्य के इतिहास में वास्तविक रूप से **महिला लेखन का पुनर्जागरण भक्ति काल (14वीं–17वीं शताब्दी)** में देखा जाता है।

यह काल स्त्री कवयित्रियों के लिए **सशक्त अभिव्यक्ति का युग** सिद्ध हुआ, जहाँ उन्होंने सामाजिक, धार्मिक और लैंगिक बंधनों से मुक्त होकर **ईश्वर और आत्मा के संवाद** के माध्यम से अपनी चेतना व्यक्त की।

(क) मीराबाई (1498– 1546)

मीराबाई का साहित्य स्त्री लेखन की नींव है।

उनके पदों में भक्ति के साथ-साथ **स्त्री की व्यक्तिगत स्वतंत्रता, भावनात्मक विद्रोह और आत्मस्वीकृति** झलकती है।

वह पितृसत्तात्मक मर्यादाओं को तोड़ते हुए कहती हैं —

"मीराँ तो गिरधर के रंग राची।"

यह आत्मनिर्णय की घोषणा है, जो स्त्री को केवल भक्त नहीं बल्कि **विचारशील आत्मा** के रूप में प्रस्तुत करती है।

(ख) अन्य कवयित्रियाँ

मीराबाई के अतिरिक्त **बहिनाबाई, रजाबाई, सहजोबाई, दयाबाई, और संत जनाबाई** जैसी कवयित्रियों ने भी स्त्री जीवन, श्रम और सामाजिक भेदभाव के प्रश्नों को अपने भक्ति-साहित्य में पिरोया।[9] उनके भजनों में "स्त्री-श्रम", "सेवा" और "आत्मभक्ति" के माध्यम से आत्मबल की झलक दिखाई देती है।[10]

उदाहरण के रूप में जनाबाई कहती हैं —

"मीठा कड़वा सब समान, विठ्ठल नाम मुख राम।"[11]

यह दृष्टि उस **आध्यात्मिक समता** का प्रतीक है, जिसमें जाति या लिंग का भेद मिट जाता है।

4. रीति काल और स्त्री का आदर्शीकरण

रीति काल (17वीं–18वीं शताब्दी) में हिन्दी काव्य ने भक्ति की आंतरिकता से हटकर श्रृंगारिक सौंदर्य और नायिका-भेद की परंपरा को अपनाया।[12]

इस युग में स्त्री कविता का विषय तो बनी, पर स्वयं कवयित्री के रूप में उसकी उपस्थिति बहुत कम रही।[13]

स्त्री की भूमिका "नायिका" तक सीमित होकर रह गई।

हालाँकि, कवि रानी रूपमती, कवयित्री राधिका, और देवी दयावती जैसी कुछ महिला कवयित्रियाँ सक्रिय रहीं, जिन्होंने श्रृंगार में मर्यादा और भावनात्मक गहराई जोड़ी।

5. आधुनिक युग की पृष्ठभूमि: नवजागरण और स्त्री चेतना (1857–1947)

भक्ति और रीति के बाद भारतीय समाज एक व्यापक परिवर्तन की ओर अग्रसर हुआ, जहाँ औपनिवेशिक सत्ता के दबाव, सामाजिक सुधार आंदोलनों की सक्रियता, और नवजागरण की बौद्धिक लहरों ने आधुनिकता तथा राष्ट्रवाद का एक सशक्त युग निर्मित किया। 1857 के संग्राम के उपरांत भारतीय समाज में राजनीतिक चेतना तीव्र हुई और शिक्षण संस्थानों, समाचार-पत्रों, सामाजिक संगठनों तथा साहित्यिक मंडलों ने स्त्रियों के लिए शिक्षा, आत्मचिंतन और सार्वजनिक अभिव्यक्ति के नए द्वार खोल दिए। स्त्री अब केवल घरेलू सीमाओं में बंद एक मौन दर्शक नहीं रही, बल्कि समय की परिवर्तनशील धारा में एक सक्रिय सहभागी के रूप में उभरने लगी।

इसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में जानकी यशिबाई, कुमारिका सिंह, सुभद्रा कुमारी चौहान और महादेवी वर्मा जैसी लेखिकाओं का पदार्पण हुआ—जिन्होंने साहित्य में स्त्री-स्वर को न केवल पुनर्स्थापित किया, बल्कि उसे राष्ट्रीय चेतना और आधुनिक मानववाद से भी जोड़ा। जानकी यशिबाई और कुमारिका सिंह ने स्त्री-शिक्षा, सामाजिक सुधार और नैतिक पुनर्निर्माण के प्रश्नों को लेखन के केंद्र में लाकर स्त्री-चेतना को वैचारिक आयाम प्रदान किए।

सुभद्रा कुमारी चौहान की कालजयी रचना **"झाँसी की रानी"** आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्त्री-वीरत्व की सबसे प्रभावशाली काव्य-घोषणाओं में से एक है। यह कविता केवल ऐतिहासिक वर्णन नहीं, बल्कि स्त्री-शक्ति की सांस्कृतिक पुनर्संहृति है—जहाँ रानी लक्ष्मीबाई एक ऐतिहासिक पात्र से आगे बढ़कर **प्रतिरोध, स्वाधीनता और साहस की सार्वकालिक प्रतीक** बन जाती हैं। चौहान की कविताएँ यह सिद्ध करती हैं कि राष्ट्रवाद के आंदोलन में स्त्री केवल प्रेरणा-शक्ति नहीं, बल्कि संघर्ष और नेतृत्व की प्रत्यक्ष भागीदार है।

महादेवी वर्मा ने इस राष्ट्रीय चेतना को भावनात्मक गहराई और बौद्धिक परिपक्वता से समृद्ध किया। उनके साहित्य में स्त्री न तो केवल राष्ट्र-कल्पना की 'माता' है और न ही केवल करुणा का प्रतीक, बल्कि वह एक **सम्पूर्ण संवेदनात्मक सत्ता** है—जो अपने आंतरिक संघर्षों, आत्मान्वेषण और स्वतंत्र अस्तित्व की खोज के माध्यम से साहित्य को नई सौंदर्य-दृष्टि प्रदान करती है। महादेवी के काव्य में स्त्री का 'स्व' निरंतर विकसित होता हुआ दिखाई देता है—एक ऐसा स्व जो परंपरा से संवाद करता है, परंतु उसी के भीतर निहित सीमाओं को चुनौती देकर स्वयं की स्वतंत्र पहचान गढ़ता है।

इस प्रकार आधुनिक युग में महिला लेखन, राष्ट्रवाद, सामाजिक सुधार, आध्यात्मिक संवेदना और आधुनिक चिंतन के मिलन-बिंदु के रूप में उभरता है। स्त्री-स्वर यहाँ न केवल बाहरी सामाजिक अन्यायों के विरुद्ध संघर्ष करता है, बल्कि वह अपने भीतर की जटिलताओं, इच्छाओं और संभावनाओं को भी स्वर देता है। परिणामस्वरूप हिन्दी साहित्य में स्त्री एक **विमर्शकर्ता, सृजक, परिवर्तनकारी और सौन्दर्य-मूल्यों की वाहक** के रूप में प्रतिष्ठित होती है।

यदि इस समग्र यात्रा को देखें, तो स्पष्ट होता है कि —

कालखंड	प्रमुख स्वर	स्त्री लेखन की स्थिति
वैदिक काल	ज्ञान और वैचारिक संवाद	ऋषिकाओं द्वारा मौलिक सृजन
शास्त्रीय काल	पितृसत्तात्मक संरचना	स्त्री का स्वर दबा, पात्र रूप में चित्रण
भक्ति काल	आत्मानुभूति और भक्ति	स्त्री का पुनर्जागरण, मीराबाई आदि
रीति काल	श्रृंगार और नायिका	आदर्शीकृत स्त्री, सीमित सृजन
आधुनिक काल	राष्ट्रवाद और चेतना	स्त्री का पुनः आत्मप्रकाश
समकालीन काल (1990–2020)	नारीवाद, आत्मस्वीकृति	स्वतंत्र विचार और वैश्विक पहचान

समकालीन हिन्दी महिला लेखन (2000– वर्तमान): आत्मस्वर से वैश्विक स्वर तक

1. सदी के आरंभ में स्त्री की नई पहचान (2000– 2010)

नए सहस्राब्दी के आरंभ में हिन्दी साहित्य में स्त्री लेखन का फोकस बदलने लगा।

अब स्त्री न केवल *संवेदना की प्रतीक* रही, बल्कि *चिंतन, प्रतिरोध और आत्मनिर्णय की आवाज़* बन गई।

इस दौर की महिला लेखिकाएँ नारीवादी विमर्श को सामाजिक यथार्थ के साथ जोड़ते हुए *"व्यक्तिगत अनुभव से सार्वभौमिक प्रश्नों तक"* पहुँचती हैं।

प्रमुख लेखिकाएँ और उनके योगदान:

- अनामिका – उनकी कविताओं में स्त्री की आत्मस्वीकृति, भाषा की मुक्ति और देह-चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति दिखाई देती है। संग्रह *"टोकरी में दिगंत"* (2009) को साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।
- गीता श्री – उपन्यास *"अनुगूँज"*, *"राजनटनी"*, *"रिटर्न गिफ्ट"* में स्त्री के बहुआयामी अनुभवों, सामाजिक पाखंड और पुरुषवादी सत्ता के प्रतिरोध की गूंज है।
- मृदुला गर्ग – यद्यपि उन्होंने लेखन पहले आरंभ किया, पर 2000 के बाद उनके उपन्यास *"कठगुलाब"* और *"द्वितीय जीवन"* ने स्त्री के मानसिक संसार को नई गहराई दी।[14]
- चित्रा मुद्गल – उपन्यास *"आवां"* (2008) में उन्होंने नक्सलवाद, समाज और स्त्री के संघर्ष को जोड़ा।[15]
- यह समय स्त्री के अंतर्मन की राजनीति को समझने और उसे समाज की मुख्यधारा में लाने का काल था।[16]

2. वैश्विक दृष्टि और बहुआयामी विमर्श (2010– 2020)

- इस दशक में हिन्दी महिला लेखन ने डिजिटल युग की संभावनाओं को अपनाया। ब्लॉग, वेब पोर्टल, ई-पत्रिकाएँ, और सोशल मीडिया ने स्त्रियों को प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति का मंच दिया।

अब लेखन केवल मुद्रित नहीं, बल्कि डिजिटल सक्रियता का हिस्सा बन गया।[17]

लेखन की प्रमुख प्रवृत्तियाँ:

1) देह और पहचान का विमर्श — स्त्री ने अपनी देह को "लज्जा या बंधन" नहीं बल्कि "अस्तित्व और शक्ति" के प्रतीक के रूप में पुनर्परिभाषित किया।

a) उदाहरण: *अनामिका की कविताएँ*, *गीता श्री के कथा-लेखन*, *कविता की स्त्री-विषयक आलोचना*।[18]

2) कामकाजी महिला और महानगरीय जीवन — शहरी स्त्री का संघर्ष, आत्मनिर्भरता, और भावनात्मक जटिलताएँ जैसे विषय प्रखर रूप में सामने आए।

a) उदाहरण: *मनीषा कुलश्रेष्ठ* की रचनाएँ जैसे *"शिगाफ"* और *"मल्लिका ए हिंदुस्तान"*।[19]

3) हाशिए की स्त्रियाँ और दलित विमर्श — अब लेखन में उच्चवर्गीय स्त्री तक सीमित दृष्टि नहीं रही।

a) बेबी हालदार की आत्मकथा *"आलो आंधारे"* (अनुवादित) ने घरेलू कामगार स्त्री के जीवन को साहित्यिक केंद्र में लाया।
b) सुशीला टाकभौरे, कुमुद शर्मा आदि ने दलित स्त्री की आवाज़ को साहित्य में प्रतिष्ठा दी।
4) क्वियर और लैंगिक विविधता का उदय — समलैंगिक और ट्रांसजेंडर पहचान पर भी अब लेखिकाएँ खुलकर लिखने लगीं, जैसे *"इषिता मुखर्जी"* और *"पूनम वर्मा"*।
5) इस दौर की महिला लेखन में *अभिव्यक्ति की विविधता और दृष्टिकोण की स्वतंत्रता* दोनों ही बढ़े।

3. नई पीढ़ी की लेखिकाएँ और डिजिटल स्त्री चेतना (2020– वर्तमान)

2020 के बाद के वर्षों में हिन्दी महिला लेखन ने पोस्ट-फेमिनिस्ट और इंटरसेक्शनल दृष्टि अपनाई है।

स्त्री अब केवल "पुरुष के प्रतिरोध" का प्रतीक नहीं, बल्कि स्वतंत्र विचारक, दार्शनिक और विश्व नागरिक के रूप में उभरती है।

प्रमुख रुझान और उदाहरण:

1) डिजिटल मंचों पर सक्रिय लेखिकाएँ — जैसे *कविता*, *नीलम शर्मा अंशु*, *मधु सोलंकी*, *सविता सिंह*, और *विभा रानी*, जो फेसबुक, ब्लॉग और ऑनलाइन पत्रिकाओं में नियमित लिख रही हैं।
2) स्त्री और पर्यावरण का संबंध — स्त्री-देह और प्रकृति दोनों के शोषण के बीच समानता को साहित्यिक विमर्श बनाया गया है।
a) *सविता सिंह* की कविताएँ इस "ईको-फेमिनिज़्म" का उदाहरण हैं।
3) महामारी और एकाकीपन — कोविड-19 के बाद लिखे गए लेखन में *अकेली स्त्री*, *घरेलू हिंसा*, *डिजिटल थकान* और *मानसिक स्वास्थ्य* के मुद्दे बार-बार सामने आए हैं।
4) ऑनलाइन पत्रिकाएँ जैसे *स्त्रीकाल*, *पहचान*, *समकालीन जनमत* ने इस तरह के लेखन को मंच दिया।
5) अंतरराष्ट्रीय पहचान — हिन्दी महिला लेखन का अनुवाद अब अंग्रेज़ी, फ्रेंच, और जर्मन में व्यापक रूप से हो रहा है, जिससे स्त्री लेखन वैश्विक विमर्श में शामिल हुआ है।[20]

समकालीन लेखन की विशेषताएँ (2000– अब तक)

विषय	प्रवृत्ति	उदाहरण
आत्मस्वीकृति	स्त्री अपने जीवन, देह और भावनाओं की स्वामी है	अनामिका, मृदुला गर्ग[21]
सामाजिक यथार्थ	दलित, श्रमिक, ग्रामीण स्त्रियों की आवाज़	बेबी हालदार, सुशीला टाकभौरे
महानगरीय संघर्ष	पेशेवर और निजी जीवन के तनाव	मनीषा कुलश्रेष्ठ[22]
डिजिटल चेतना	ब्लॉग, ऑनलाइन कविता, वेब कथाएँ	कविता, विभा रानी
पर्यावरणीय विमर्श	प्रकृति और स्त्री का सह-अस्तित्व	सविता सिंह[23]
वैश्विक स्त्री दृष्टि	अनुवादित रचनाएँ और अंतरराष्ट्रीय मंच	गीता श्री, अनामिका

निष्कर्ष:

वैदिक काल की ऋषिकाओं से लेकर इक्कीसवीं सदी के डिजिटल युग तक हिन्दी साहित्य में महिला लेखन की यात्रा मूलतः स्त्री-स्वर की पुनर्प्राप्ति, आत्मसत्ता की खोज और सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की यात्रा है। प्रारंभिक काल में स्त्री ज्ञान, वेद-विचार और दार्शनिक संवाद की प्रमुख सहभागी थी—लोपामुद्रा, घोषा, अपाला जैसी ऋषिकाओं ने यह सिद्ध किया कि स्त्री बौद्धिक परंपरा की मूलधारा में समान रूप से उपस्थित है।

मध्यकाल में भक्ति आंदोलन ने इस चेतना को नई गति दी, जहाँ मीराबाई, जनाबाई और बहिनाबाई जैसी संत कवयित्रियों ने धार्मिक से आगे बढ़कर सामाजिक प्रतिरोध का सशक्त माध्यम बना। आधुनिक युग में स्वतंत्रता आंदोलन और सामाजिक सुधारों ने महिला लेखन को वैचारिक तीव्रता प्रदान की। सुभद्रा कुमारी चौहान, जानकी यशिबाई, महादेवी वर्मा जैसी लेखिकाओं ने राष्ट्रभावना, स्त्री-अस्मिता और मानवीय संवेदना को साहित्य में केंद्रीय स्थान दिलाया। इस युग में स्त्री "वर्णित पात्र" से आगे बढ़कर स्वयं विमर्श की निर्माता बनती है।

समकालीन एवं उत्तर-आधुनिक लेखन में यह यात्रा और अधिक बहुआयामी हो गई है। अनामिका, मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्गल, गीता श्री, मनीषा कुलश्रेष्ठ, सविता सिंह और बेबी हालदार जैसी लेखिकाएँ स्त्री-जीवन के विविध अनुभवों—देह, मन, श्रम, वर्ग, स्मृति, डिजिटल अस्तित्व और वैश्विक संदर्भ—को नई दृष्टि और नई भाषा प्रदान कर रही हैं। अब स्त्री लेखन केवल प्रतिरोध का स्वर नहीं, बल्कि सृजन, विचार, संवेदना और परिवर्तन का जीवंत दस्तावेज बन चुका है।

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि हिन्दी महिला लेखन का इतिहास केवल साहित्यिक विकास की कथा नहीं, बल्कि भारतीय समाज में स्त्री की जागृति, संघर्ष, आत्मनिर्माण और परिवर्तन का गहन सांस्कृतिक अभिलेख है। यह लेखन उस मौन को स्वर देता है, जो सदियों से दबा रहा, और उन संरचनाओं को प्रश्नांकित करता है जो स्त्री की स्वतंत्रता को सीमित करती थीं। आज की लेखिकाएँ इन संरचनाओं को न केवल चुनौती देती हैं, बल्कि उन्हें नए अर्थ भी प्रदान करती हैं।

अंततः, वैदिक ऋचाओं से लेकर आधुनिक डिजिटल अभिव्यक्ति तक फैली यह अखंड परंपरा यह सिद्ध करती है कि—

- स्त्री अब साहित्य में केवल उपस्थिति नहीं, बल्कि सह-निर्माण और भविष्यनिर्माण की केंद्रीय शक्ति है।
- उसका लेखन भाषा को समृद्ध करने के साथ-साथ समाज की चेतना को भी नई दिशा प्रदान करता है।
- और सबसे महत्वपूर्ण, यह धारा आगे भी मानवीय संवेदना, सामाजिक परिवर्तन और साहित्यिक नवाचार को निरंतर प्रवाहित करती रहेगी।

इसी निरंतर प्रवाह में हिन्दी साहित्य में स्त्री लेखन की सबसे बड़ी उपलब्धि निहित है—कि उसने साहित्य को न केवल संवेदना दी, बल्कि एक नया दृष्टिकोण, नया विवेक और नया भविष्य भी प्रदान किया।

सन्दर्भ सूची:

I. प्राथमिक स्रोत:

1. **बेबी हालदार**। (2002). *आलो आंधारे*। कोलकाता: आनंद प्रकाशन।
2. **चौहान, सुभद्रा कुमारी**। (1930). *झाँसी की रानी*। इलाहाबाद: इंडियन प्रेस।
3. **चित्रा मुद्गल**। (2008). *आवां*। नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
4. **जनाबाई, संत**। (14वीं शताब्दी). *जनाबाई के अभंग*। पुणे: वारकरी संप्रदाय संग्रहालय।
5. **महादेवी वर्मा**। (1942). *दीपशिखा*। प्रयाग: प्रयाग प्रकाशन।
6. **महादेवी वर्मा**। (1956). *घुँघट की जूनी*। कलकत्ता: बंगाल पब्लिशर्स।
7. **महादेवी वर्मा**। (1958). *अतीत के चलचित्र*। इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
8. **मन्नू भंडारी**। (1961). *आपका बंटी*। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
9. **मीराबाई**। (15वीं शताब्दी). *मीराबाई के पद*। राजस्थानी संत काव्य संग्रह में संकलित।
10. **मृदुला गर्ग**। (1996). *कठगुलाब*। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
11. **अनामिका**। (2009). *टोकरी में दिगंत: तेरी कविताएँ* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
12. **गीता श्री**। (2014). *राजनर्तकी*। नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
13. **कृष्णा सोबती**। (1966). *मित्रो मरजानी*। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
14. **कृष्णा सोबती**। (1979). *सूरजमुखी अँधेरे के*। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
15. **उषा प्रियंवदा**। (1963). *वप्सी*। नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
16. **कुसुम अंसल**। (1995). *एक और पंचवटी*। नई दिल्ली: साहित्य अकादमी।

II. द्वितीयक स्रोत / आलोचनात्मक संदर्भ:

1. **आनंद, एम.** (2018). *समकालीन हिन्दी महिला लेखिकाएँ* जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स।
2. **अर्चना वर्मा**। (2018). *भारतीय स्त्री की कथाएँ: आलोचनात्मक अध्ययन*। दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
3. **इला प्रसाद**। (2013). *महिला लेखन और सामाजिक परिप्रेक्ष्य*। दिल्ली: समकालीन प्रकाशन।
4. **कुमार, कृष्ण**। (2011). *स्त्री लेखन: एक विश्लेषण*। नई दिल्ली: भारतीय साहित्य अकादमी।
5. **खोसल, पी.** (2019). *आधुनिक हिन्दी लेखन में डिजिटल नारीवाद*। नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
6. **किरण सिंह**। (2014). *हिन्दी स्त्री साहित्य का इतिहास*। जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
7. **नंदिनी, एस.** (2015). *आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारीवादी स्वर*। दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।
8. **नंदा, सुधा**। (2017). *भारतीय नारीवाद का विकास*। दिल्ली: अवध पब्लिशिंग हाउस।
9. **पाण्डेय, आर.** (2017). *स्त्री और साहित्य: आधुनिक संदर्भ*। लखनऊ: लोकभारती प्रकाशन।
10. **प्रभा खेतान**। (1995). *स्त्री और पुरुष*। नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
11. **प्रभा खेतान**। (2005). *भारतीय नारी: अस्तित्व और संघर्ष*। नई दिल्ली: साहित्य अकादमी।
12. **रंजन, मीरा**। (2020). *भारतीय परिप्रेक्ष्य में ईकोफेमिनिज़्म: स्त्री, प्रकृति और संस्कृति*। दिल्ली: प्राइमस बुक्स।
13. **राय, अनामिका**। (2020). *नारीवाद: सिद्धांत और व्यवहार*। दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ।
14. **लक्ष्मी, के.** (2016). *स्त्री और कथा: भारतीय संदर्भ*। नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
15. **शर्मा, कुमुद**। (2005). *नारी चेतना और हिन्दी साहित्य*। दिल्ली: साहित्य भवन।
16. **शुक्ला, उर्मिला**। (2007). *स्त्री चेतना की धाराएँ* इलाहाबाद: लोकभारती।
17. **सागर, रश्मि**। (2021). *समकालीन स्त्री दृष्टि और हिन्दी उपन्यास*। नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स।
18. **वर्मा, एस.** (2012). *महादेवी वर्मा और हिन्दी स्त्री लेखन*। नई दिल्ली: किताब घर।
19. **द्विवेदी, रामशंकर**। (1960). *घुँघट की जूनी* (हिन्दी अनुवाद)। इलाहाबाद: सरस्वती प्रेस।
20. **जोशी, आशा**। (2022). *हिन्दी महिला लेखन का सामाजिक दृष्टिकोण*। वाराणसी: ज्ञानमंडल।

III. अंतरराष्ट्रीय संदर्भ

1. Beauvoir, Simone de. (1949). *The Second Sex*. Vintage Books.
2. Butler, Judith. (1990). *Gender Trouble*. Routledge.
3. hooks, bell. (1984). *Feminist Theory: From Margin to Center*. South End Press.
4. Mohanty, Chandra Talpade. (2003). *Feminism Without Borders*. Duke University Press.
5. Spivak, Gayatri Chakravorty. (1988). *Can the Subaltern Speak?* Harvard University Press.

IV. प्रतिष्ठित ऑनलाइन पत्रिकाएँ / पोर्टल

1. हंस पत्रिका ऑनलाइन

- **www.hanshindimagazine.in**
- स्त्री-विमर्श, दलित विमर्श, समकालीन कथा–कविता और आलोचना के उत्कृष्ट लेख।

2. स्त्रीवादी संसाधन केन्द्र – "फेमिनिज़्म इन इंडिया (FII)"

- **www.feminisminindia.com**
- भारतीय नारीवाद, लैंगिक मुद्दे, साहित्य, संस्कृति और स्त्री अधिकारों पर शोधपरक लेख।

3. स्त्री-पुरुष समानता मंच – "Genderink.com"

- **www.genderink.com**
- जेंडर, संस्कृति और भाषा पर शोध-आधारित सामग्री।

4. प्रतिलिपि – साहित्यिक पोर्टल

- **www.pratilipi.com**
- कथा, कविता और स्त्री-लेखन के विविध रूप—हालाँकि शैक्षणिक उपयोग में सावधानी, पर सामग्री व्यापक।

5. स्त्री-संसार ऑनलाइन

- **www.strisamsar.com**
- नारी साहित्य, स्त्री इतिहास, महिला लेखिकाओं से जुड़े निबंध।

II. शैक्षणिक जर्नल और शोध डेटाबेस

6. JStor (लिटरेचर / जेंडर स्टडीज़ सेक्शन)

- **www.jstor.org**
- भारतीय स्त्री साहित्य, नारीवाद, सांस्कृतिक अध्ययन पर अंग्रेज़ी के उच्च-स्तरीय शोध लेख।

7. Shodhganga – INFLIBNET (PhD Dissertations)

- **https://shodhganga.inflibnet.ac.in**
- भारत के विश्वविद्यालयों के हजारों शोध-प्रबंध—महिला लेखन, नारीवाद, आधुनिक साहित्य पर विशेष सामग्री।

8. EPW – Economic and Political Weekly

- **www.epw.in**
- समाज, संस्कृति, जाति, जेंडर, और राजनीति पर उच्च-स्तरीय शोध लेख।

9. Academia.edu (Hindi Literature / Gender Studies)

- **www.academia.edu**
- शोधकर्ताओं द्वारा अपलोड किए गए स्त्री-अध्ययन और साहित्य पर शोध पत्र।

10. ResearchGate

- **www.researchgate.net**
- भारतीय नारीवाद और साहित्यिक अध्ययन पर कई समीक्षित शोध लेख।

III. सरकारी/अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के संसाधन (Institutional & Policy Resources)

11. NCERT – Gender & Education Resources

- **ncert.nic.in**
- पाठ्यचर्या में लैंगिक दृष्टि, महिला शिक्षा पर महत्वपूर्ण दस्तावेज।

12. UNESCO – Gender Equality Resources

- **www.unesco.org**
- वैश्विक जेंडर नीतियाँ, शिक्षा और स्त्री अधिकारों पर गहराई सामग्री।

13. UN Women India

- **www.india.unwomen.org**
- भारत में महिलाओं की स्थिति, संस्कृति, इतिहास, नीति और अधिकार।

IV.पुस्तकालय और डिजिटल आर्काइव्स (Digital Libraries & Archives)

14. Digital Library of India

- **www.dli.gov.in**
- दुर्लभ हिन्दी–संस्कृत ग्रंथों का भंडार, महिला लेखन पर कई पुराने संकलन उपलब्ध।

15. Internet Archive

- **www.archive.org**
- पुराने हिन्दी पत्रिकाओं, नारीवादी पुस्तकों और शोध संबंधित सामग्री का ओपन-एक्सेस भंडार।

16. Rekhta Gender Section

- **www.rekhta.org**
- उर्दू साहित्य में स्त्री स्वर—असग़री बेगम, रशीदजहां, इस्मत चुगताई आदि की रचनाएँ।

V.स्त्री अध्ययन केंद्र/ विश्वविद्यालय पोर्टल (Women's Studies Centres)

17. TISS – Women Studies Centre

- **wsc.tiss.edu**
- भारतीय स्त्री-अध्ययन से जुड़ी रिपोर्ट, लेख और संदर्भ सामग्री।

18. JNU – Centre for Women's Studies

- **www.jnu.ac.in**
- अनेक शोध परियोजनाएँ, वर्किंग पेपर्स, स्त्रीवादी सिद्धांत सामग्री।

19. दिल्ली विश्वविद्यालय – Women Studies Development Centre

- **www.du.ac.in**
- महिला अध्ययन पाठ्य सामग्री और राष्ट्रीय संगोष्ठियों के शोध पत्र।

20. "स्त्रीकाल" – नारीवादी साहित्यिक ऑनलाइन पत्रिका।
(www.streekaal.com)

21. **"समकालीन जनमत"** – हिन्दी साहित्यिक पोर्टल।
(www.samkaleenjanmat.in)

22. **"पहचान पत्रिका"** – महिला लेखन पर आधारित वेब जर्नल।
(www.pehchaanpatrika.in)

पादटिप्पणी -

[1] "1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम – वीर लकोरज", ऐतिहासिक संकलन, पृ. 112।

[2] वर्मा, महादेवी। (1956). घुँघट की जूनी। कलकत्ता: बंगाल पब्लिशर्स।

[3] द्विवेदी, रामशंकर। (1960). घुँघट की जूनी का हिन्दी अनुवाद। इलाहाबाद: सरस्वती कुमार, कृष्ण। (2011). स्त्री लेखन: एक विश्लेषण। नई दिल्ली: भारतीय साहित्य अकादमी।
शर्मा, कुमुद। (2005). नारी चेतना और हिन्दी साहित्य। दिल्ली: साहित्य भवन।
भूमिका एवं प्रारंभिक परिचय (जानकी यशिबाई, महादेवी वर्मा आदि)

[4] ऋग्वेद, मंडल X, सूक्त 39– 40 — घोषा एवं लोपामुद्रा की ऋचाएँ।

[5] ऋग्वेद, मंडल X, सूक्त 39– 40 — घोषा एवं लोपामुद्रा की ऋचाएँ।

[6] विश्ववारा एवं अपाला के संवाद, ऋग्वेद संहिता, मंडल VIII। नंदिनी, एस। (2015).
आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारीवादी स्वर। दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।

[7] मिश्रा, गोविंद। (2008). वैदिक युग में नारी। वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन।

[8] पाण्डेय, आर। (2017). स्त्री और साहित्य: आधुनिक संदर्भ। लखनऊ: लोकभारती प्रकाशन।

[9] गर्गी और मैत्रेयी के संवाद – बृहदारण्यक उपनिषद, अध्याय 2, खंड 4।
कालिदास। अभिज्ञानशाकुंतलम् – नारी सौंदर्य और करुणा का काव्यात्मक रूप।
भवभूति। उत्तररामचरितम्, संस्कृत नाट्य परंपरा में स्त्री संवेदना।

[10] तिवारी, विश्वनाथ। (2009). संस्कृत साहित्य में नारी। प्रयागराज: हिन्दी साहित्य सम्मेलन।

[11] तिवारी, विश्वनाथ। (2009). संस्कृत साहित्य में नारी। प्रयागराज: हिन्दी साहित्य सम्मेलन।

[12] सीता और द्रौपदी के पात्रों का विवेचन – रामायण एवं महाभारत, विश्लेषण, भार्गव प्रकाशन, 2001।

[13] कुलकर्णी, सुधा। (2001). संत जनाबाई और स्त्री विमर्श। पुणे: श्रीविद्या प्रकाशन।मीराबाई। (15वीं शताब्दी)। मीराबाई के पद। राजस्थानी संत काव्य संग्रह।

[14] रानी रूपमती। रूपमती रचनावली, सम्पा. मधुसूदन शर्मा, दिल्ली: नीरज प्रकाशन, 1978।

[15] राधिका कवयित्री की कविताएँ — रीति साहित्य में स्त्री स्वर, सं. रेखा पाण्डेय, 2006।
दयावती देवी। श्रृंगार दीपिका, लखनऊ: हिंदी परिषद, 1899।

[16] मिश्रा, रामकुमार। (1982). भारतीय स्वाधीनता संग्राम और महिला चेतना। दिल्ली: साहित्य अकादमी।

[17] चौहान, सुभद्रा कुमारी। (1930). झाँसी की रानी। इलाहाबाद: इंडियन प्रेस।
वर्मा, महादेवी। (1939). नीरजा। इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।

[18] वर्मा, एस। (2012). महादेवी वर्मा और हिन्दी स्त्री लेखन। नई दिल्ली: किताब घर।

[19] शर्मा, पुष्पलता। (1987). सुभद्रा कुमारी चौहान: जीवन और कृतित्व। प्रयागराज: हिंदी साहित्य सम्मेलन।

[20] भंडारी, मन्नू। (1980). आपका बंटी। दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

[21] शर्मा, नीलम। (2015). समकालीन हिन्दी महिला लेखन। भोपाल: मध्यप्रदेश साहित्य परिषद।

[22] खोसल, पी। (2019). आधुनिक हिन्दी लेखन में डिजिटल नारीवाद। नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।

[23] मिश्रा, डॉ. विजय। (2010). स्वाधीनता संग्राम में महिला लेखन। वाराणसी: ज्ञानमंडल।